III. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

(पृष्ठ 26)

प्रश्न 1. लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं?

[Imp.]

उत्तर–लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा नहीं था, किंतु उनके बारे में सुना अवश्य था। उसने सुना था कि उसकी नानी ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में प्रसिद्ध क्रांतिकारी प्यारेलाल शर्मा से भेंट की थी। उस भेंट में उन्होंने यह इच्छा प्रकट की थी कि वे अपनी बेटी की शादी किसी क्रांतिकारी से करवाना चाहती हैं, अंग्रेज़ों के किसी भक्त से नहीं। उनकी इस इच्छा में देश की स्वतंत्रता की पवित्र भावना थी। यह भावना बहुत सच्ची थी। इसमें साहस था। जीवन भर परदे में रहकर भी उन्होंने किसी पर–पुरुष से मिलने की हिम्मत की। इससे उनके साहसी व्यक्तित्व और मन में सुलगती स्वतंत्रता की भावना का पता चला। लेखिका इन्हीं गुणों के कारण उनका सम्मान करती है।

प्रश्न 2. लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही? [Imp.] [CBSE]

उत्तर–लेखिका की नानी आज़ादी के आंदोलन में खुलकर भाग न ले सकी। उसकी परिस्थितियाँ ऐसी नहीं थी कि वह खुलकर आंदोलनों में भाग ले सकें। परंतु उसने स्वतंत्रता की भावना को मन-ही-मन पनपने दिया। उसने कभी अंग्रेज़ियत को स्वीकारा नहीं। उसका पति अंग्रेज़ों का भक्त था, फिर भी उसने कभी अंग्रेज़ों की जीवन-शैली में भाग नहीं लिया। उसने सबसे बड़ा योगदान यह किया कि अपनी संतान को अंग्रेज-भक्तों के शिकंजे से मुक्त करा लिया। उसने अपनी बेटी की शादी एक क्रांतिकारी से करा दी ताकि उसकी बेटी और उसके बच्चे देश के लिए कुछ कर सकें। इस घटना से क्रांतिकारियों को जो उत्साह मिला होगा, उसकी कल्पना ही की जा सकती है।

प्रश्न 3. लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थी। इस कथन के आलोक में- [CBSE]

(क) लेखिका की माँ की विशेषताएँ लिखिए।

(ख) लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

अथवा

लेखिका की माँ की विशेषताएँ लिखिए। [CBSE 2014]

उत्तर–(क) लेखिका की माँ की स्थितियाँ और व्यक्तित्व–दोनों असाधारण थे। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे स्वतंत्रता आंदोलन के लिए काम करती थीं। उनकी सोच मौलिक थी। लेखिका के शब्दों में–वह 'खुद अपने तरीके से' आज़ादी के जुनून को निभाती थीं। इस विशेषता के कारण घर-भर के लोग उसका आदर करते थे। कोई उनसे घर गृहस्थी के काम नहीं करवाता था। उनका व्यक्तित्व ऐसा प्रभावी था कि ठोस कामों के बारे में उनसे केवल राय ली जाती थी और उस राय को पत्थर की लकीर मानकर निभाया जाता था।

लेखिका की माँ का सारा समय किताबें पढ़ने, साहित्य-चर्चा करने और संगीत सुनने में बीतता था। वे कभी बच्चों के साथ लाड़-प्यार भी नहीं करती थीं। उनके मान-सम्मान के दो कारण प्रमुख थे। वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं। वे एक की गोपनीय बात दूसरे से नहीं कहती थीं।

(ख) लेखिका की दादी के घर में विचित्र विरोधों का संगम था। परदादी लीक से परे हटकर थीं। वे चाहती थीं कि उनकी पतोहू को होने वाली पहली संतान कन्या हो। उसने यह मन्नत मानकर जगजाहिर भी कर दी। इससे घर के अन्य सभी लोग हैरान थे। परंतु लेखिका की दादी ने इस इच्छा को स्वीकार करके होने वाली पोती को खिलाने-दुलारने की कल्पनाएँ भी कर डालीं। लेखिका की माँ तो बिलकुल ही विचित्र थीं। वे घर का कोई काम नहीं करती थीं। वे आज़ादी के आंदोलन में सक्रिय रहती थीं। उन्हें पुस्तकें पढ़ने, संगीत सुनने और साहित्य-चर्चा करने से ही फुर्सत नहीं थी। उनके पति भी क्रांतिकारी थे। वे आर्थिक दृष्टि से अधिक समृद्ध नहीं थे। विचित्र बात यह थी कि लेखिका के दादा अंग्रेज़ों के बड़े प्रशंसक थे। घर में चलती उन्हीं की थी। किंतु घर की नारियाँ अपने-अपने तरीके से जीने के लिए स्वतंत्र थीं। कोई किसी के विकास में बाधा नहीं बनता था।

प्रश्न 4. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी? [Imp.]

उत्तर–पाठ को पढ़कर लगता है कि लेखिका की परदादी ने भी अपने समय में लड़की के साथ होने वाले अपमान और तिरस्कार को जाना-समझा होगा। उसे मन-ही-मन लगता होगा कि देवी का रूप होने पर भी लड़की का इतना तिरस्कार क्यों होता है? कब उसका सम्मान होना शुरू होगा? शायद इसीलिए उसने अपनी इस भावना को घर में ही फलते-फूलते देखना चाहा होगा। उसने समाज में यह भाव भरना चाहा होगा कि यहाँ लड़कियों का सम्मान होता है। अतः तुम भी उन्हें सम्मान दो। परदादी ने यह भी सोचा होगा कि अगर लड़कियों का सम्मान होगा तो वे आत्मविश्वास, सम्मान और साहस से भरकर शक्तिशाली बन सकेंगी।

प्रश्न 5. डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है–पाठ के आधार पर तर्क-सहित उत्तर दीजिए। [CBSE 2017]

अथवा

डरा-धमका कर क्या किसी को रास्ते पर लाया जा सकता है–पाठ के आधार पर प्रकाश डालिए। [CBSE]

उत्तर–इस पाठ से स्पष्ट है कि मनुष्य के पास सबसे प्रभावी अस्त्र है– अपना दृढ़ विश्वास और सहज व्यवहार। यदि कोई सगा संबंधी गलत राह पर हो तो उसे डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव देने की बजाय सहजता से व्यवहार करना चाहिए। लेखिका की नानी ने भी यही किया। उन्होंने अपने पति की अंग्रेज भक्ति का न तो मुखर विरोध किया, न समर्थन किया। वे जीवन-भर अपने आदर्शों पर टिकी रहीं। परिणामस्वरूप अवसर आने पर वह मनवांछित कार्य कर सकीं।

लेखिका की माता ने चोर के साथ जो व्यवहार किया, वह तो सहजता का अनोखा उदाहरण है। उसने न तो चोर को पकड़ा, न पिटवाया, बल्कि उससे सेवा ली और अपना पुत्र बना लिया। उसके पकड़े जाने पर उसने उसे उपदेश भी नहीं दिया, न ही चोरी छोड़ने के लिए दबाव डाला। उसने इतना ही कहा–अब तुम्हारी मर्जी–चाहे चोरी करो या खेती। उसकी इस सहज भावना से चोर का हृदय परिवर्तित हो गया। उसने सदा के लिए चोरी छोड़ दी और खेती को अपना लिया।

प्रश्न 6. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'–इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए। [CBSE 2014, 2015, 2017]

उत्तर–शिक्षा पाना बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। जिस बच्चे का जन्म हुआ है, उसे उचित विद्यालय में शिक्षा मिलनी ही चाहिए। यदि कहीं शिक्षा की व्यवस्था नहीं है तो उसके लिए उचित प्रबंध किया जाना चाहिए।

लेखिका कर्नाटक के छोटे-से कस्बे बागलकोट में थी। वहाँ उसके दो बच्चों को पढ़ाने की समुचित व्यवस्था नहीं थी। अतः उसने एक अच्छा स्कूल खुलवाने की भरपूर कोशिश की। पहले उसने पास के कैथोलिक बिशप से प्रार्थना की कि वे वहाँ एक स्कूल खोलें। परंतु बिशप तैयार नहीं हुए। तब उन्होंने अपनी कोशिशों से, कुछ उत्साही लोगों को साथ लगाकर वहाँ एक अच्छा प्राइमरी स्कूल खुलवाया। उसमें लेखिका तथा अन्य अफसरों के बच्चे पढ़े तथा बाद में बड़े-बड़े स्कूलों में भर्ती होने योग्य बन गए।

प्रश्न 7. पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है? **[Imp.]** [CBSE 2015]

उत्तर–इस पाठ के आधार पर स्पष्ट है कि ऊँची भावना वाले दृढ़ संकल्पी लोगों को श्रद्धा से देखा जाता है। जो लोग सद्भावना से व्यवहार करते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर गलत रूढ़ियों को तोड़ डालने की हिम्मत रखते हैं, समाज में उनका खूब आदर-सम्मान होता है।

लेखिका की नानी इसलिए श्रद्धेया बनी क्योंकि उसने परिवार और समाज से विरोध लेकर भी अपनी पुत्री को किसी क्रांतिकारी से ब्याहने की बात कही। इस कारण वह सबकी पूज्या बन गई।

लेखिका की परदादी इसलिए श्रद्धेया बनी क्योंकि उसने दो धोतियों से अधिक संचय न करने का संकल्प किया था। उसने परंपरा के विरुद्ध लड़के की बजाय लड़की होने की मन्नत माँगी।

लेखिका की माता इसलिए श्रद्धेया बनी क्योंकि उसने देश की आजादी के लिए कार्य किया। कभी किसी से झूठ नहीं बोला। कभी किसी की गोपनीय बात को दूसरे को नहीं बताया।

ये सभी व्यक्तित्व सच्चे थे, लीक से परे थे तथा दृढ़ निश्चयी थे। इस कारण इनका सम्मान हुआ। इन पर श्रद्धा प्रकट की गई।

प्रश्न 8. 'सच, अकेलेपन का मजा ही कुछ और है'–इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए। [CBSE]

उत्तर–लेखिका और उसकी बहन में अकेले अपने पथ पर चलने का दृढ़ साहस है। लेखिका ने अपने बलबूते पर बिहार के रूढ़िपंथी लोगों के बीच रहकर नारी-जागृति का कार्य किया। उन्होंने शादीशुदा औरतों को पर-पुरुषों के साथ नाटकों में अभिनय करने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उनमें एक धुन सवार थी। इसी भाँति उन्होंने कर्नाटक के एक छोटे-से कस्बे बागलकोट में जाकर नया प्राइमरी स्कूल खुलवाया।

लेखिका की बहन रेणु अपने मन की मालिक खुद थी। उसे स्कूल से लौटते समय गाड़ी में आना पसंद नहीं था। इसलिए वह पसीने से तरबतर होकर भी पैदल घर आती थी। इसी प्रकार बी.ए. की परीक्षा पास करने में उसकी कोई रुचि नहीं थी। उसने सभी से यह प्रश्न पूछा–आखिर बी.ए. की डिग्री से क्या मिल जाएगा? संतोषजनक उत्तर न मिलने की स्थिति में उसने पेपर देने में खूब आनाकानी की। भीषण बरसात वाले दिन उसका अकेले स्कूल में जाना यह प्रमाणित करता है कि वह अकेले राह पर चलना जानती थी।

ये दोनों व्यक्तित्व मौलिक थे। ये स्वतंत्र सोच रखते थे। ये लीक पीटने वाले पोंगापंथी लोग नहीं थे। ये विचारवान थे और अपनी राह पर स्वयं चलने की हिम्मत रखते थे।

IV. अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

विवेचनात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखिका परदादी के किन गुणों से प्रभावित थी और क्यों? [CBSE]

उत्तर–लेखिका की परदादी का व्यक्तित्व अनुकरणीय था। उनकी दो बातें हमें अपरिग्रह और नारी सम्मान की प्रेरणा देती हैं।

परदादी ने स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर रखी थी कि वह अपने पास दो धोतियों से अधिक नहीं रखेंगी। यदि उन्हें तीसरी धोती मिली तो वे उसे किसी को दान कर देंगी। उनका यह व्यवहार हमें सादगी, संयम और त्याग की प्रेरणा देता है।

परदादी ने ईश्वर से मन्नत माँगी कि उसकी पतोहू को पहला लड़का न होकर लड़की हो। उसने यह मन्नत छिपाकर नहीं रखी, बल्कि सबके सामने की। उसने अपनी इस कामना के पीछे कोई तर्क भी नहीं दिया। निश्चित रूप से वह चाहती होंगी कि दुनिया में लड़कों का ही नहीं, लड़कियों का भी स्वागत सम्मान होना चाहिए। उनकी यह भावना भी अनुकरणीय है।

परदादी सच्ची ईश्वर-भक्त थीं। वे सच्चे मन से ईश्वर से जो भी माँगती थीं, उन्हें मिल जाता था। उनका यह भक्त स्वभाव भी अनुकरणीय है।

प्रश्न 2. लेखिका की माँ के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। **[Imp.]** [CBSE]

अथवा

'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर लेखिका की माँ का चरित्र-चित्रण उनके जीवन-मूल्यों के आधार पर कीजिए। [CBSE 2017]

उत्तर–लेखिका की माँ एक दुबली-पतली, सुंदर, कोमल नारी थी। विवाह से पहले वह इतनी दुबली थीं कि उनकी सास मजाक में कहा करती थी–*'हमारी बहू तो ऐसी है कि धोई, पोंछी और छींके पर टाँग दी।'* यहाँ तक कि खादी की साड़ी पहनने से उसकी कमर चनका खा जाती थी।

लेखिका की माँ के व्यक्तित्व के वास्तविक गुण थे–ईमानदारी, निष्पक्षता, सत्य बोलना, गैर दुनियादारी और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना। वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं। किसी के साथ अन्याय नहीं करती थीं। सबकी गोपनीय बातों को अपने मन में ही रखा करती थीं। वे आम भारतीय नारियों की तरह घर-गृहस्थी, बाल-बच्चे, लाड़-प्यार और खाने-पकाने को ही जीवन नहीं मानती थीं, अपितु देश, समाज, त्याग और सेवा को अपना धर्म मानती थीं। इसलिए घर के सब लोग–छोटे-बड़े, सास-जेठानी तक उनका सम्मान करते थे। जब लोग उनसे घर के काम करवाने के बारे में प्रश्न पूछते थे तो उनकी सास कहा करती थी–*''हम हाथी पे हल ना जुतवाया करते, हम पे बैल हैं।''* वास्तव में लेखिका की माँ उच्चाशय नारी थीं।

प्रश्न 3. भारतीय माँ का आम चरित्र कैसा होता है? लेखिका की माँ उनसे किस प्रकार अलग थीं? उनके कार्य भार को किसने उठाया? **[Imp.]**

उत्तर–एक आम भारतीय माँ ममता की मूर्ति होती है। उसके जीवन का केंद्र उसकी संतान होती है। वह उन्हीं के लिए जीती-जागती है। भारतीय माँ अपने बच्चों से अपूर्व लाड़ करती है। वह उन्हें खिलाने-पिलाने और उनकी देखभाल के लिए पूरी तरह समर्पित होती है। वही बच्चों को जीवनोपयोगी संस्कार भी देती है। उन्हें अच्छी बेटी और बहू बनने की सीख देती है। लेखिका की माँ यह सब नहीं करती थी। न बच्चों से लाड़ करती थी, न खाना पकाती थी, न उन्हें सीख देती थी। इसलिए वह आम भारतीय माताओं से भिन्न थी।

लेखिका की माता के इन घरेलू कार्यों को घर के अन्य सदस्यों ने सँभाल लिया। उनकी जेठानियाँ और खुद उनके पति भी बच्चों के पालन-पोषण का जिम्मा उठा लेते थे।

प्रश्न 4. कर्नाटक के बिशप ने स्कूल खोलने से क्यों मना किया? क्या धर्म के नाम पर स्कूल खोलना प्रशंसनीय है?

उत्तर–कर्नाटक के बिशप ने कर्नाटक के छोटे-से कस्बे में स्कूल खोलने से इसलिए मना किया क्योंकि वहाँ ईसाई लोग बहुत थोड़े थे। वे क्रिश्चियनों की पढ़ाई के लिए स्कूल खोलना चाहते थे। अन्य लोगों के लिए स्कूल खोलने में उनकी रुचि नहीं थी। पादरी महोदय लेखिका के बच्चों के लिए स्कूल खोलने के लिए इस शर्त पर तैयार हुए कि वह स्कूल आगे आने वाले 100 सालों तक चलता रहे। यह असंभव-सी शर्त थी। उनका सिद्धांत था–न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी। आशय यह है कि वे गैर क्रिश्चियनों के लिए स्कूल नहीं खोलना चाहते थे। धर्म के आधार पर स्कूल का खोलना, न खोलना किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता। यह अधिक से अधिक धार्मिक स्वार्थ कहा जा सकता है।

प्रश्न 5. स्त्रियों की स्वतंत्रता उनके विकास में कितनी सहायक होती है? 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर उत्तर दें।

[CBSE 2018]

उत्तर– स्त्रियाँ स्वतंत्र होकर ही अपना विकास कर सकती हैं। इस पाठ की नानी, माँ, दादी और स्वयं लेखिका इस बात का प्रमाण है। नानी ने अंग्रेज-भक्त पति के होते हुए अपनी बेटी का विवाह एक देशभक्त से कराया और उसके जीवन को बदलकर रख दिया। माँ ने जीवन-भर अध्ययन, संगीत और साहित्य में मन रमाया और समाज को दिशा दी। लेखिका ने अपने आत्मविश्वास से दूसरे प्रदेश में रहते हुए अपनी इच्छानुसार एक नए विद्यालय की नींव रखी। लेखिका की दादी भी लड़कों की बजाय लड़कियों के जन्म को प्रोत्साहन देती रहीं। इन बातों से सिद्ध होता है कि स्त्रियों की स्वतंत्रता उनके विकास में सहायक होती है।